अध्ययन 3

अब मैं परमेश्वर के मार्ग में जा रहा हूँ

यीशु के पीछे चलना

हरके सच्चा मसीही यीशु के शिष्य होने के लिये बुलाया गया है इसका अर्थ है कि वे यीशु के पीछे चलेंगे और यीशु की बातों को अपने जीवन में प्रथम स्थान देंगे । अपने स्वयं के मूल्य का ध्यान दिए बिना जो नमूना यीशु ने रखा है उसी के अनुसार अपना जीवन ढालने के लिये वे निर्णय करेंगे।

"जो कोई यह कहता है कि मैं उसमें बना रहता हूँ, उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था ।" (1 यूहन्ना 2:6)

जब आप अधिक से अधिक *इस* बात की रौशानी में जीवन व्यतित करते हैं कि परमेश्वर कौन है तथा उसने क्या कहा है, तो बहुत से प्रश्न, तनाव, भ्रम व्याकुलता तथा सन्देह मुर्झाना आरम्भ हो जाएगा । यद्यपि कुछ कठिन परिस्थितियाँ रहेंगी, आप परमेश्वर पर भरोसा रखें जो सब कुछ अपने नियंत्रण में रखता है । आप अपने हृदय में सच्ची शान्ति और आनन्द का अनुभव करेंगे ।

परमेश्वर को प्रथम स्थान देना

"इसलिए पहले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएगी" । (मत्ती 6:33)

परमेश्वर ने हमें अनेक विशेषाधिकार तथा लाभ दिया है उसके पीछे चलने के कारण से। परन्तु हमारे पास कुछ निश्चित उत्तरदायित्व भी है ।

परमेश्वर हम से आशा करता है कि जो कुछ उसने हमारे साथ भलाई की है इन सब के लिये उसका ध्नयवाद करें तथा उसकी आज्ञाओं का पालन करें जब वह हमें अपना मार्ग दिखलाता है । हमारा मसीह के साथ चलना तथा मसीही के रुप में बढ़ते जाना इस बात पर निर्भर करता है कि हम परमेश्वर की इच्छा के प्रति कितना आज्ञाकारी हैं । हमें परमेश्वर को प्रथम स्थान देने की आवश्यकता है तथा उसके लिये जीवित रहना है न कि हमारे स्वयं के लिये ।

यीशु ने कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आपे से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रुंस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले । क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा, परन्तू जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा ।"

(लूका 9:23–24)

इस प्रकार यीशु के पीछे चलने का अर्थ है संघर्ष तथा परीक्षाएँ जिसका सामहना करना पड़ेगा परन्तु इसका अर्थ यह भी है कि यीशु को, उसकी इच्छा तथा उसके कार्य को अपने जीवन में प्रथम स्थान देंगे आप पूर्णतः परमेश्वर का प्रेम अनुभव करना आरम्भ करेंगे और यह भी कि वह आपका ध्यान रखता है क्योंकि उसने प्रतिज्ञा किया है कि वह आप के प्रतिदिन की आवश्यकताओं का पूरा करेंगे । (पढ़े मत्तीः 6:25-34)

"जो मुझे (तुझे) सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूँ ।"

(फिलिप्पियों 4:13)

हमें अपना जीवन यीशु को समापिर्त करना उसके पीछे चलना तथा उसकी आज्ञाओं का पालन करने की आवश्यकता है प्रति दिन के जीवन में । सच्चे मसीही लोगों का जीवन स्तर संसार के लोगों के जीवन स्तर से बहुत ऊँचा है । जिस में उसकी इच्छा के अनुसार हमें चलना है । इस के लिये साहस की आवश्यकता है परन्तु वह हमें सब साहस तथा सामर्थ प्रदान करेगा जो कुछ हमें आवश्यकता है यदि हम उसकी ओर ताकेंगे तथा जो कुछ हमें करने के लिये कहता है उसे करते हैं ।

परमेश्वर का मार्ग आनन्द और पूर्णता देता है

"तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएग; तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है, तेरे दाहिने हाथ सुख सर्वदा बना रहता है।"

(भजन 16:11)

मसीही बनने का अर्थ परेशान होना नहीं है परन्तु बहुत बड़ा आनन्द तथा पुर्णता है जिसे इस जीवन में कोई दूसरा नहीं दे सकता है क्योंकि मसीही लोग परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन व्यतित करते हैं। पाप का आनन्द अन्त में आप को नाश कर देगा परन्तु परमेश्वर का आनन्द आप को लाभ पहुंचाएगा, अनन्त काल तक ।

परेश्वर हमें अपना मार्ग दिखाएगा जो सर्वोत्तम मार्ग है :—

एक मसीही होने के कारण जब आप कोई महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते हैं तो आप जैसा सोचते हैं वैसा न करें परन्तु परमेश्वर के खोजें तथा उसके पवित्र आत्मा को आप की आगुवाई करने दें । आप परमेश्वर का वचन (बाइबल) से भी प्रभावित हों जब आप प्रतिदिन इसका अध्ययन करते हैं । यदि आप यह तय नहीं कर पाते हैं कि आप को क्या करना है अथवा आप परमेश्वर की अगुवाई चाहते हैं, एक अच्छा प्रश्न स्वयं से करना कि यीशु क्या करेगा? यदि आप को थोड़ा भी सन्देह है तो इसे न करें विशेषकर यदि परमेश्वर का दिया हुआ विवेक आप को परेशान करता है । परमेश्वर को आप की आगुवाई करने दें तथा मसीह की शान्ति आप के हदय में राज्य करें । (देखिए कुलुस्सियों 3:15)

"तु अपनी समझ का सहारा न लेना वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना । उसी को स्मरण करके सब काम करना तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा ।" (नीतिवचन 3:5–6)

आप जो कुछ भी करते हैं उसमे यीशु को पहला स्थान दें । यदि आप

अनुभव करें कि अपने जीवन के विशेष पहलु में यीशु को अमंत्रित नही कर सकते (हो सकता है आप शर्मिन्दा है इस विषय में) तो इस कार्यकलाप को हटा दें क्योंकि यह बात आप को परमेश्वर से भटका देगी । परमेश्वर को उसकी योजना तथा अपनी इच्छा आप पर कार्य करने दें । आपने अपनी आत्मा से अनन्त काल के लिये उस पर भरोसा रखा है, अब आप अपने प्रतिदिन के जीवन में भी भरोसा रखें । आप उस पर भरोसा रखें कि वह आप की समस्याओं को तथा आवश्यकताओं को प्रगट करें । वह हर बात में आप की सहायता कर सकता है और वह सहायता करेगा ।

परमेश्वर हमें विश्वास से जीवित रहने के लिये कहता है :–

"अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है ।" (इब्रानियों 11:1)

परमेश्वर पर विश्वास करना ही विश्वास है और जो कुछ उस ने कहा है न कि जो कुछ हम देखते हैं अथवा अनुभव करते हैं । हमें परमेश्वर पर विश्वास की आवश्यकता है ।

"विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है, और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है ।" (इब्रानियों 11:6)

हम विश्वास किस प्रकार प्राप्त करते हैं ?

"विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।" (रोमियों 10:17)

जब हम परमेश्वर के वचन सुनते हैं तो विश्वास हमारे जीवन में आता है और विश्वास करते हैं कि परमेश्वर जो कुछ चाहता है वह करता है। यदि आप ने अपना जीवन यीशु मसीह को दे दिया है और इसलिए नया

जन्म प्राप्त किए हैं तब आप के पास विश्वास का निर्श्चित परिमाण है ।

"सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें । जिस के द्वारा विश्वास और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें ।" (रोमियों 5:1–2)

क्या हम देने के द्वारा अपना विश्वास प्रगट कर सकते हैं ?

परमेश्वर के पास अपने संतान के लिये असीम घन है हमारा जो कुछ उसका है हम उसके वारिस हैं (देखें रोमियों 8:17) परमेश्वर उस धन को हमारे साथ बाँटना चाहता है । (देखें रोमियों 8:32) जो कुछ हमारे पास है वह परमेश्वर से है और परमेश्वर ने हमें सेवक या रखवाला नियुत्त किया है इन सब के लिये । हम परमेश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रगट कर सकते है उदारता पूर्वक देने के द्वारा अपने आप को, अपना समय को, अपना धन को, अपनी प्रतिभा तथा अपना धन को उनहें दे सकते हैं जिन्हें आवश्यकताहै । दान देना एक शिक्षा है जो कुछ परमेश्वर ने हमें दिया उसे बाँटने का तथा एक अच्छा सेवक बनने का। बाइबल बताती है,

इसे याद रखों "जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी और जो बहुत बोता है वह बहुत काटेगा ।" (2 कुरिन्थियों 9:6)

हम उतना अधिक नहीं दे सकते जितना अधिक परमेश्वर हमें वापस देता है । (देखें लूका 6:38)

पानी का बपतिस्मा क्या है ?

कलीसिया स्थापित होने के प्रथम दिन से ही लोगों ने पूर्ण रुप से पानी में डूब का बपतिस्मा लिया जब वे विश्वासी बन गये । (देखें प्रेरित 2:38–39) बपतिस्मा का अर्थ बहुत साधारण है "डुबना अथवा गोता लगाना" । बाइबल में यही शब्द कपड़े रंगने के विषय में वर्णन किया गया है ।

कपड़े को रंगने के लिये रंग के घोल में डुबाया जाता हैं परिणाम स्वरूप कपड़ा पूर्णतः रंगीन हो जाता है । कपड़ा रंगने का यह विधि कपड़े में मौलिक परिवर्तन ला देता है। अब वह भिन्न रंग में निकल आता है । ठीक इसी प्रकार पानी का बपतिस्मा भी है । जब एक व्यक्ति वपतिस्मा लेता है, वह पानी के अन्दर डूब जाता है या डुबाया जाता है, यह इस बात का प्रतिक है कि इसके जीवन में बहुत बड़ा परिवर्त्तन आ गया है । इस विषय में यह पानी नहीं है; (रंग घोला हुआ) जो परिवर्तन लाता है, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा परिवर्तन आता है ।

बाइबल में पानी का वपतिस्मा के विषय सबसे अच्छा वर्णन रोमियों 6:1–11 में किया गया है । आप समय निकालें और इन महत्त्वपूर्ण पदों का पढ़ें और आप को इस कार्य के अभिप्राय समझ में आ जाएगा । हम इसे सारांश में इस प्रकार रख सकते हैं :

- यह गाड़े जाने का प्रतीक है । हम इस प्रतिकात्मक कार्य से भली भांति परिचित हैं जो प्रभु यीशु की मृत्यु से जुड़ा हुआ है । एक व्यक्ति जिसने बपतिस्मा ले लिया है वह कहता है कि वह मसीह के साथ मर गया। (देख रोमियों 6:3)
- यह इस बात का प्रमाण देता है कि हमारा पुराना जीवन समाप्त हो रहा है। यह हमें शारीरिक मृत्यु के बारे में नहीं बताते हैं परन्तु उस सच्चाई के विषय में कि जब एक व्यक्ति मसीही विश्वासी बन जाता है, तब वह अपने पुराने जीवन शैली से सम्बन्ध तोड़ देता है । (देखें कुलुस्सियों 2:11–12)
- यह एक प्रतिज्ञा है कि हम मसीह के साथ नया जीवन का आरम्भ करते हैं । (देखें गलतियों 2:20)
- यह इस बात की पुष्टि करता है कि हमारी सहभगिता जीवित परमेश्वर के साथ हैः पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा । (देखें कुलुसियों 3:1–4)

- यह हमारे पापों का धुल जाने को दिखाता है क्योंकि हमने अपने आपको यीशु के क्रुस पर के कार्य के सामहने ला दिया है । (प्रेरित 22:16)
- यह एक अंगीकार है कि हम विश्वास की सच्चाई पर स्थिर रहें जिसे मसीहियों ने आरम्भ से थामा है । (देखें । कुरिन्थियों 15:3–7) हम अपने पुराने जीवन की वास्तविकता से निकल कर परमेश्वर की सामर्थ से नये जीवन में प्रवेश किए हैं । (देखें 2 कुरिन्थियों 5:17)
- यह यीशु मसीह के आज्ञा का पालन करना है जो एक चिन्ह है कि उसके वचनों को अपने जीवन में रखते हैं उसके विश्वासयोग्य शिष्यों के समान (देखें मत्ती 28:19)

पूर्ण रीति से डूब कर पानी का बपतिस्मा आप के यीशु मसीह पर विश्वास की अंगीकार के बाद आता है और जो कुछ उस ने आप के लिये किया है पिता पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से । पानी के अन्दर डूब का बपतिस्मा के विषय आप स्थानीय कलीसिया से पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं । कुछ कलीसियाओं में पानी के बपतिस्मा के विषय विभिन्न विचार हैं जो यहां आप के लिये वर्णन किया गया है । परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह इस विषय में आप से क्या चाहता है तथा अपने कलीसिया के अगुवों के साथ बातचीत करें ।

प्रश्न एवं सकेत :–

1. यूहन्ना 8:31,32 तथा कुलुस्सियों 3:17 के अनुसार यीशु मसीह के शिष्य के रूप में हमें कैसे रहना चाहिए ?
2. जिस प्रंकार का जीवन हम जीते हैं क्या हमारे पास परमेश्वर के सन्मुख उत्तरदायित्व है ? (मत्ती 5:16)
3. निम्नलिखित वचन यीशु मसीह में हमारे विषय क्या कहता है ? (2 कुरिन्थियों 5:17; कुलुस्सियों 2:9–10, 3:9–10)
4. क्या कोई भी चीज हमें मसीह के प्रेम से अलग कर सकता है ? (रोमियों 8:38,39)

5. कौन सा आश्वासन पवित्र आत्मा हमें देता है कि हम परमेश्वर की सन्तान है ? (रोमियों 8:14–7)
6. सब से बड़ी कौन सी विशेषता है जिसे एक मसीही विश्वासी दिखला सकता है ? (1 कुरिन्थियों 13: 1–13)
7. अपने प्रोत्साहन के लिये पढ़ें इफिसियों 2:6–10, 2 पतरस 1:3
8. क्या विश्वास से चलने का अर्थ है अपनी आंखों को बन्द कर वही करना जो हम अनुभव करते है तथा सबसे अच्छा के लिये आशा करते हैं ? (इब्रानियों 12:2)
9. परमेश्वर पर विश्वास रखना क्या कर सकता है ? (मरकुस 11:22–23)
10. पानी का बपतिस्मा के विषय निम्नलिखित पद क्या कहता है ? (मत्ती 3:13–17, 1 पतरस 3: 21–22)

प्रार्थना :–

सर्वशक्तिमान परमेश्वर यीशु मसीह में जो कुछ भी तू ने मेरे लिये किया है इस के लिये धन्यवाद । उसके शिष्य के रुप में मैं जीवित रहना चाहता हूँ। जब मैं ऐसा करने का प्रयत्न करता हूँ कृप्या तू मेरी सहायता कर तथा सामर्थ दे । मुझे दिखला दे कि यीशु मसीह क्या करेगा हर एक परिस्थिति में जो मेरे साम्हने आएगा । मेरी सहायता कि जो कुछ मैं करुं, हमेशा उस को प्रथम स्थान दे सकूं। विश्वास के लिये भी आप को धन्यवाद देता हूँ जो आप ने मुझे दिया है जिस के द्वारा मैं तेरी सन्तान में से एक गिने जाने के योग्य हो पाया हूँ । मेरे विश्वास को बढ़ने में मदद कर ताकि मैं और भी अधिक प्रभावी रुप से सेवा कर सकूँ । अभी बहुत बातें है जो मैं नहीं समझ पाता हूँ परन्तु मैं अपना जीवन तेरे हाथों में सौप देता हूँ । यह प्रार्थना मैं यीशु के नाम से करता हूँ । आमीन।